IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12 ,S Iss 1, 2023

जयप्रकाश नारायण राजनीतिक विचारधाराः एक अध्ययन

डॉ० अनिल कुमार चौधरी* श्री राम साह**

*एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, जे.एन. कॉलेज, मधुबनी

**शोध छात्र, विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा।

परिचय–

अपनी सर्वोदयी और समग्र क्रांति के निष्ठावान प्रणेता की भूमिका के पूर्व अपने राजनीतिक जीवन के प्रारम्भिक काल में जयप्रकाश नारायण भारतीय समाजवाद के एक प्रमुख व्याख्याता के रूप में प्रसिद्ध थे। राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के सर्वोच्च नेता महात्मा गाँधी उन्हें समाजवाद के मुख्य व्याख्याकार के रूप में स्वीकार करते थे। उनकी प्रारम्भिक समाजवाद के प्रति तथा बाद में सर्वोदय एवं समग्र क्रान्ति के प्रति निष्ठा का एकमात्र लक्ष्य एक ऐसी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था के आदर्श की खोज करना था जो व्यक्ति की सामाजिक ही नहीं, वैयक्तिक स्वतंत्रता और समानता के सिद्धान्त और व्यवहार पर आधारित हो तथा जिसमें रहकर हर व्यक्ति इनका उपभोग करते हुए अपने सामाजिक और वैयक्तिक जीवन का आदर्श विकास करने हेतु समान अवसर प्राप्त कर सके। जयप्रकाश नारायण का सम्पूर्ण जीवन एक ऐसे ही समाज के आदर्श प्रतिमान की खोज में व्यतीत किए हुए जीवन की महागाथा है। इसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु सत्ता के मोह से विरक्त होकर उन्होंने एक आदर्श समर्पित जीवन जिया और निर्लिप्त भाव से उसने जीते हुए अपनी सम्पूर्ण जीवन यात्रा सम्पन्न की। इस दृष्टि से वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक नायक ही नहीं, उसकी स्वतंत्रता की रक्षा करनेवाले एक सच्चे 'लोकनायक' भी थे। उनके त्यागमयी और सतत् संघर्षशील जीवन के कारण ही भारतीय जनता ने उन्हें 'लोकनायक' की उपाधि विभूषित किया। वे आज भी जीवित नहीं रहते हुए भी इसी लोकप्रिय और सम्मानजनक नाम से पुकारे जाते हैं। जयप्रकाश नारायण भारतीय समाजवाद के प्रमुख नेता, प्रचारक तथा प्रवक्ता रहे हैं।

लोकनायक जयप्रकाश नारायण का जन्म 11 अक्टूबर सन् 1902 को सिताबदियरा नामक गाँव में एक साधारण कायस्थ परिवार में हुआ। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में सम्पन्न हुई तथा उच्च शिक्षा प्रारंभ में पटना के विज्ञान महाविद्यालय में हुई। उनकी शादी बिहार के प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता श्री बृज किशोर बाबू की पुत्री प्रभावती के साथ दरभंगा में सम्पन्न हो गया। पटना में अध्ययन

के दौरान ही जयप्रकाश नारायण राष्ट्रीय विचारों से प्रभावित होने लगे। वे एक मेधावी और कुशाग्र बुद्धि छात्र थे। हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषा का उन्हें अच्छा ज्ञान था। अपने राष्ट्रवादी रूझान के कारण जयप्रकाश नारायण अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़कर गाँधी के असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े लेकिन चौरी-चौरा काण्ड के कारण जब गाँधीजी ने असहयोग आन्दोलन बन्द कर दिया तो उनके बहुत से साथी अपनी पढ़ाई पूर्ण करने के लिए पुनः कॉलेज में दाखिल हो गए लेकिन जयप्रकाश नारायण अपने राष्ट्रवादी विचारों के कारण किसी ऐसी शिक्षण संस्था में पढ़ना नहीं चाहते थे जो सरकार द्वारा स्थापित हो तथा उससे प्राप्त अनुदान से संचालित होती हो।

इसीलिए वे सन् 1922 में उच्च शिक्षा हेतु अमेरिका चले गए तथा वहाँ एक श्रमजीवी के रूप में रहते हुए उन्होंने स्वावलम्बन के आधार पर ओहियो से स्नातक तथा विस्कोन्सिल राज्य के विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण की। एक शिक्षार्थी के रूप में उन्होंने अमेरिका म सात वर्ष व्यतीत किए। इसी दौरान वे मार्क्सवादी साम्यवाद के सम्पर्क में आये और उसका ज्ञान प्राप्त करने के लिए उन्होंने मार्क्स, ऐंजिल्स, लेनिन, ट्रॉटस्की आदि के ग्रंथों का पूरे मनोयोग से अध्ययन किया। भारतीय साम्यवादी लेखक एम.एन. राय के विचारों से भी परिचित हुए। इस सबके प्रभाव से वे एक साम्यवाद प्रेरित मार्क्सवादी बन गए, लेकिन वे रूसी क्रांति के समर्थक नहीं थे। रूस की बौलशेविक पार्टी ने जो क्रूर कृत्य किए थे, उससे उनकी नैतिक चेतना को भारी आघात पहुँचा था।

अपनी माता की गम्भीर रुग्णता का समाचार मिलने पर सन् 1929 में जयप्रकाश नारायण स्वदेश लौट आए। उनके अमेरिका प्रवास के दौरान उनकी धर्मपत्नी प्रभावती देवी गाँधीजी के सान्निध्य में साबरमती आश्रम में रहती थीं। गाँधीजी भी इन्हीं दिनों भारतीय मुक्ति संग्राम के दूसरे चरण सविनय अवज्ञा आन्दोलन को प्रारंभ करने की तैयारी में जुटे थे। जयप्रकाश नारायण उनसे मिलने के लिए साबरमती आश्रम गए जहाँ उनकी भेंट पंडित जवाहर लाल नेहरू से भी हुई। नेहरू उनके विचारों से काफी प्रभावित हुए। जयप्रकाश नारायण उनके साथ सन् 1929 के कांग्रेस के ऐतिहासिक लाहौर अधिवेशन में भाग लिया। नेहरू जी ने उनकी प्रतिभा का राष्ट्रीय आन्दोलन में उपयोग करने हेतु उन्हें कांग्रेस के श्रम अनुसन्धान ब्यूरो के अध्यक्ष के रूप आमंत्रित किया और उन्होंने 1930 में यह दायित्व ग्रहण कर लिया। इसी वर्ष नमक सत्याग्रह के माध्यम से गाँधीजी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारंभ कर दिया, जिसमें जयप्रकाश नारायण ने भूमिगत रहकर सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया। फलतः सन् 1932 में उन्हें गिरफ्तार कर एक वर्ष के लिए नासिक रोड सेण्ट्रल जेल में नजरबन्द कर दिया गया। वहीं जयप्रकाश नारायण का सम्पर्क वहाँ नजरबन्द कांग्रेस के कुछ युवा नेताओं से हुआ, जो समाजवादी रूझान के थे तथा कांग्रेस को तदनुरूप एक

IJFANS
International Journal of
Food And Nutritional Sciences
Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12 ,S Iss 1, 2023

विस्तृत जन संगठन बनाकर उसे समाजवादी रूप प्रदान करना चाहते थे। फलस्वरूप जेल में ही उन्होंने आवश्यक तैयारी के रूप में कांग्रेस में ही एक समाजवादी दल के गठन की रूपरेखा निर्धारित की।

सन् 1934 में जेल से रिहा होने पर इन युवा कांग्रेस नेताओं के द्वारा 'कांग्रेस समाजवादी दल' का गठन किया तथा युवा जयप्रकाश नारायण इस दल के प्रमुख सूत्रधार बने। इस कांग्रेस समाजवादी दल का मार्च 1934 में कांग्रेस के पटना अधिवेशन के समय, एक सम्मेलन आयोजित किया गया और जयप्रकाश नारायण इस दल के प्रथम सम्मेलन में महासचिव नियुक्त किए गए तथा 1936 में फैजपुर में आयोजित उसके तृतीय सम्मेलन में उसके अध्यक्ष निर्वाचित कर लिए गए। अध्यक्ष निर्वाचित होने के पश्चात् जयप्रकाश नारायण ने साम्यवादियों के साथ मिलकर एक साम्राज्यवाद विरोधी मोर्चा बनाने का प्रयत्न किया लेकिन साम्यवादी राष्ट्रवादी कम और अन्तर्राष्ट्रवादी अधिक थे तथा इस कारण राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम में अपनी नीतियों और कार्यक्रमों के निर्धारण के लिए सोवियत रूस से प्रभावित थे। अतः दृष्टिकोणों में इस अन्तर के कारण जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में कार्य करने वाले समाजवादियों का साथ साम्यवादियों के साथ अधिक समय तक निभ नहीं सका। फलतः वे साम्यवादियों से अलग होकर कांग्रेस में रहते हुए स्वतंत्र रूप से राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन में अपनी भूमिका का निर्वाह करने लगे।

समाजवादी विचारधारा के प्रचार-प्रसार हेतु सन् 1939 में जयप्रकाश नारायण ने बम्बई से 'कांग्रेस सोशलिस्ट' नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया तथा किसानों, मजदूरों और महिलाओं को संगठित करने के लिए समाजवादी मोर्चे की स्थापना की। सन् 1940 में सरकार द्वारा उनको गिरफ्तार कर जेल में बन्द कर दिया गया। गाँधीजी सहित मुक्ति आन्दोलन के अन्य नेताओं द्वारा उनकी गिरफ्तारी का विरोध किया गया तथा उन्हें देश की स्वतंत्रता संघर्ष का एक ऐसा अदम्य योद्धा घोषित किया जो देश के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने हेतु संकल्पित था। जेल से रिहा होकर वे पुनः पूरे जोर-शोर से देश के स्वतंत्रता संघर्ष में भाग लेने लगे। पुनः उन्हें गिरफ्तार कर देवली जेल में नजरबन्द कर दिया। सन् 1942 में गाँधीजी ने अपने नेतृत्व में 'करो या मरो' का नारा देते हुए 'भारत छोड़ो आन्दोलन प्रारंभ कर दिया। इस आन्दोलन में भाग लेने हेतु जयप्रकाश नारायण अपने कुछ साथियों के साथ जेल से फरार हो गए तथा भूमिगत होकर उस आन्दोलन को गति देने लगे। गिरफ्तारी से बचने के लिए वे नेपाल चले गए तथा वहाँ ब्रिटिश राज को उखाड़ फेंकने के लिए एक आजाद दस्ते का गठन किया। वे आन्दोलन को सक्रिय करते हुए नेपाल से गुप्त रूप से देश के विभिन्न भागों की यात्राएँ करने लगे। इसी दौरान सन् 1943 में लाहौर में उन्हें गिरफ्तार कर वहाँ के किले में नजरबन्द कर दिया गया। सन् 1946 में उन्हें वहाँ से रिहा किया

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

गया।

इस प्रकार देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में अदम्य साहसपूर्ण सक्रिय भूमिका के कारण वे एक जननायक के रूप में प्रतिष्ठित हो गए तथा उनकी गणना देश के शीर्षस्थ नेताओं में होने लगी। जेल से रिहा होने के पश्चात् उन्होंने पुनः कांग्रेस समाजवादी दल को सक्रिय किया और उसके माध्यम से देश की स्वतंत्रता के लिए कार्य करने लगे। देश की स्वतंत्रता के पश्चात् उन्होंने किसी सरकारी पद पर रहना स्वीकार नहीं किया क्योंकि कांग्रेस द्वारा जिन नीतियों का अनुसरण किया जा रहा था, वे उन्हें समाजवाद के अनुकूल नहीं लगीं। सन् 1948 में गाँधीजी की हत्या के कारण जयप्रकाश नारायण को गहरा आघात लगा। परिणामस्वरूप समाजवादियों ने कांग्रेस से स्वयं को पृथक कर एक स्वतंत्र भारतीय समाजवादी पार्टी' का गठन किया जो बाद में सन् 1952 में आचार्य कृपलानी के नेतृत्व में कांग्रेस से सम्बन्ध विच्छेद कर निकले कांग्रेसियों द्वारा गठित 'कृषक-मजदूर प्रजा पार्टी' से संयुक्त होकर 'प्रजा समाजवादी पार्टी' के रूप में प्रकट हुई। जयप्रकाश नारायण ने इस विलय में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने सन् 1953 में जयप्रकाश नारायण सहित सभी समाजवादियों को सरकार में सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया लेकिन जयप्रकाश नारायण के प्रस्ताव पर नेहरू की सहमति नहीं के कारण दोनों दल के मध्य सहयोग की सारी सम्भावनाएँ समाप्त हो गयीं। इसी बीच सन 1951 में गाँधीजी के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी के रूप में विनोबा भावे के नेतृत्व में भारत की भूमि समस्या के समाधान हेतु भूदान आन्दोलन प्रारंभ हुआ। जयप्रकाश नारायण इस आन्दोलन से प्रभावित हुए तथा सत्ता की राजनीति से दूर होकर इस आन्दोलन की सफलता हेतु सक्रिय योगदान देने लगे। उनपर गाँधीवादी प्रभाव इतना था कि वे समाजवाद की गाँधीवादी व्याख्या करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि भारतीय सामाजिक परिस्थितियों में 'गाँधीवाद ही सच्चा समाजवाद' है। साध्य-साधन एकता पर जोर देते हुए वे पूर्णतः एक नैतिकतावादी बन गए। फलतः उन पर जो मार्क्सवाद का प्रभाव बचा था, वह भी समाप्त हो गया और समाजवादी होते हुए भी वे पूर्णतः एक गाँधीवादी बन गए।

इस वैचारिक परिवर्तन के पश्चात् विनोबा भावे के समान जयप्रकाश नारायण भी भूदान आन्दोलन को सफल बनाने में जी-जान से जुट गए। अपना शेष जीवन समर्पित कर वे एक पूर्णकालिक भूदानी बन गये तथा इसकी सिद्धि ही उनके जीवन का लक्ष्य बन गया। जयप्रकाश नारायण ने सन् 1970 में नक्सली समस्या का समाधान करने का प्रयत्न किया, लेकिन वे आंशिक रूप से इसमें सफल हुए तथा उनके नैतिक प्रभाव से प्रभावित होकर लगभग चार सौ नक्सलियों ने उनके सम्मुख अपने हथियार डालकर आत्म-समर्पण कर दिया। लेकिन 1973 में उनकी धर्मपत्नी

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12 ,S Iss 1, 2023

के निधन के बाद वे राजनीतिक गतिविधियों से विरक्त हो जीवन जीने लगे। उनका स्वास्थ्य भी गिरने लगा था।

लेकिन देश की हालत बिगड़ती जा रही थी। राजनीतिक भ्रष्टाचार, प्रशासकीय अकुशलता और आर्थिक विफलता आदि के कारण जन-जीवन अशांति के दौर से गुजर रहा था और उसे कोई सही नेतृत्व देनेवाला नहीं था। अतः इस स्थिति ने जयप्रकाश नारायण को पुनः राजनीति में सक्रिय होने के लिए बाध्य कर दिया। सन् 1974-75 में उन्होंने गुजरात और बिहार में देश के शुद्धिकरण हेतु छात्रों द्वारा चलाए जाने वाले आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया तथा 'संपूर्ण क्रांति' के लिए जनता का आह्वान भी किया। शीर्घ ही यह आन्दोलन देश के अन्य भागों में फैल गया और जन-संघर्ष समितियों के द्वारा संचालित होने लगा। इसी बीच जून 1975 में इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने चुनाव में भ्रष्ट आचरण के आरोप में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी के निर्वाचन को अवैध घोषित कर दिया। इस पर जयप्रकाश नारायण ने दिल्ली में आयोजित विशाल आम सभा में उनसे नैतिक आधार पर त्यागपत्र की माँग कर आन्दालन प्रारंभ कर दिया। इस आन्दोलन से भयाक्रान्त होकर देश में आपात स्थिति की घोषणा कर जयप्रकाश नारायण सहित देश के सभी विपक्षी नेताओं को गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया। जेल में जयप्रकाश नारायण का स्वास्थ्य और तेजी से खराब होने लगा, इस कारण उन्हें जेल से रिहा कर दिया गया।

जनवरी 1977 में लोक सभा चुनाव की घोषणा का लाभ उठाते हुए जयप्रकाश नारायण ने सभी विपक्षी दलों में कांग्रेस विरोधी एकता कायम करने का प्रयास किया और फलस्वरूप एक सशक्त विरोधी दल के रूप में 'जनता पार्टी' अस्तित्व में आयी तथा जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में शानदार सफलता प्राप्त की। लेकिन थोड़े ही समय में जयप्रकाश नारायण ने इस सरकार से भी निराशा अनुभव की तथा स्वीकार किया कि “यह सरकार भी जन-आकांक्षाओं पर खरी नहीं उतरी।" सच तो यह है कि जयप्रकाश नारायण मानववादी आदर्शों से प्रेरित व्यक्ति थे जिनके जीवन का एक ही उद्देश्य समता एवं स्वतंत्रता आधारित शोषणमुक्त समाज की स्थापना करना था। स्वास्थ्य के निरन्तर गिरावट के कारण 8 अक्टूबर, 1979 को उनका निधन हो गया।

मार्क्सवादी प्रभाव–

अमेरिका में शिक्षा के दौरान उनके चिन्तन पर मार्क्सवाद का गहरा प्रभाव पड़ा। मार्क्सवादी साहित्य के अध्ययन एवं लेनिन के नेतृत्व में रूस की साम्यवादी क्रान्ति ने उनके चिन्तन पर निर्णायक प्रभाव डाला और वे उसे ही मानव मात्र की शोषण से मुक्ति का एकमात्र मार्ग मानने लगे। भारतीय लेखक एम० एन० राय द्वारा रचित मार्क्सवादी साहित्य ने भी उन्हें प्रभावित किया

और उनका हृदय अन्याय, असमानता, दासता, शोषण आदि के विरूद्ध संघर्ष के लिए स्वयं को संकल्पबद्ध समझने लगे। उनका कहना है कि स्वतंत्रता का अर्थ शोषण से, भुखमरी से, दरिद्रता से उनकी मुक्ति अनिवार्य रूप से होना चाहिए।

गाँधीवादी प्रभाव–

जयप्रकाश के चिन्तन में गाँधीवादी प्रभाव के दो चरण रहे हैं। एक अध्ययन हेतु अमेरिका जाने के पूर्व का वरण तथा दूसरा, वहाँ से अध्ययन समाप्त कर भारत लौटने के पश्चात् का वरण। अमेरिका जाने के पूर्व जयप्रकाश नारायण गाँधीजी से प्रभावित होकर पटना में अपनी पढ़ाई बीच में छोड़कर असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े। एक राष्ट्रवादी के रूप में देश की ब्रिटिश राज से मुक्ति उनके जीवन का सर्वोपर उद्देश्य बन गया। दूसरा चरण अमेरिका से लौटने के बाद जयप्रकाश नारायण का मार्क्सवादी साम्यवाद से मोहभंग का काल है। जयप्रकाश नारायण का मार्क्सवाद स मोहभंग होने लगा और उसका स्थान गाँधीवाद लेने लगा। इसमें गाँधी भक्त उनकी धर्मपत्नी प्रभावती देवी की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। जयप्रकाश नारायण को यह अनुभव होने लगा कि देश की स्वतंत्रता - प्राप्ति का सर्वाधिक उपयुक्त और विश्वसनीय मार्ग सत्य और अहिंसा आधारित गाँधीवादी मार्ग ही है। अब मार्क्सवाद की जगह गाँधीवाद और मुख्य रूप से उनके द्वारा की जाने वाली उसकी समाजवादी व्याख्या, उनके जीवन का मूलमंत्र बन गया। जयप्रकाश नारायण के चिन्तन की यह गाँधीवादी स्थिति देश की स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् गाँधीजी की शहादत तक सक्रिय रूप से बनी रही।

भूदानी एवं सर्वोदयी प्रभाव–

देश की स्वतंत्रता के पश्चात् उसकी विकट भूमि समस्या के समाधान हेतु एक गाँधीवादी प्रयास के रूप में गाँधीजी के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी विनोबा भावे द्वारा भूदान आन्दोलन प्रारम्भ किया गया। इसके माध्यम से उन्होंने न्याय और सद्भाव के आधार पर देश के जागीरदारों - जमींदारों से यह आग्रह किया कि वे आवश्यकता से अधिक जो भूमि उनके अधिकार में है, उसके न्यायपूर्ण विभाजन हेतु उसका दान अर्थात् भूदान कर दें। प्रारंभ में जयप्रकाश नारायण इस आन्दोलन से विशेष प्रभावित नहीं हुए लेकिन बाद में विनोबा भावे के सम्पर्क में आने के कारण वे इसका महत्व समझकर एक सक्रिय सहयोगी के रूप में इस भूदान आन्दोलन में शामिल हो गए। भूदान आन्दोलन विकसित होकर 'ग्रामदान' आन्दोलन के रूप में परिवर्तित हो गया, इसे

जयप्रकाश नारायण अहिंसक गाँधीवादी सत्याग्रह के तरीके का ही विकास मानने लगे और उसे सशक्त और प्रभावशाली बनाने में लग गए। अब गाँधीवादी सर्वोदय उनके जीवन का मूलमंत्र तथा सर्वोदयी समाज की स्थापना उनके जीवन का प्रमुख उद्देश्य बन गया। इसी में उन्होंने सच्चे समाजवाद के दर्शन किए।

सर्वोदय से समग्र क्रांति की ओर–

लकिन भूदान, ग्रामदान आधारित सर्वोदयी आन्दोलन भी सामाजिक व्यवस्था में बुनियादी परिवर्तन करने में असफल रहा जिन्हें लेकर वे एक सक्रिय सर्वोदयी बने थे। अतः 1970 में जयप्रकाश नारायण ने यह अनुभव किया कि इस सर्वोदयी विचारधारा और व्यवस्था से समाज में बुनियादी परिवर्तन लाना असंभव है। ऐसी विषम और विकट स्थिति में उन्होंने अनुभव किया कि सामाजिक व्यवस्था का शुद्धिकरण सिर्फ, 'समग्र क्रान्ति' द्वारा ही संभव है। एक ऐसी बुनियादी क्रान्ति जो अहिंसक तरीके से सम्पूर्ण व्यवस्था को आमूल-चूल बदलने में समर्थ हो। 5 जून, 1974 को पटना में आयोजित छात्र संघर्ष समिति की आम सभा में उसकी अनिवार्यता बतलाते हुए उसकी व्याख्या करते हुए कहा कि 'समग्र क्रांति' ही वर्तमान समय में देश की समस्याओं का एकमात्र हल है। आज एक शोषण मुक्त एवं न्यायनिष्ठ समाज की स्थापना की यह पहली आवश्यकता है। केवल इस क्रान्ति के माध्यम से ही समाज के हर क्षेत्र में एक समता-आधारित शोषण मुक्त समाज के लक्ष्य की प्राप्ति संभव है। 'समग्र क्रान्ति' के द्वारा स्थापित होनेवाले समाज की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि "यह एक ऐसा लोकतांत्रिक समाज होगा जिसमें प्रत्येक नागरिक एक श्रमिक होगा और हर एक नर-नारी में पूर्ण समानता होगी। विकास के सबको समान अवसर उपलब्ध होंगे। व्यक्तियों की आय में इतना अन्तर नहीं होगा कि समाज में वर्ग-भेद उत्पन्न हो जाए। सारी सम्पत्ति का स्वामी समाज होगा। प्रगति योजनाबद्ध तरीके से होगी। श्रम बेगार नहीं, आनन्द का विषय होगा। कुल मिलाकर मानव जीवन अधिक सम्पन्न, सम्पूर्ण और सुन्दर होगा।"

इस प्रकार जयप्रकाश नारायण के चिन्तन में 'सम्पूर्ण क्रांति' का आशय था कि इसके माध्यम से एक ऐसी समाज व्यवस्था की स्थापना जो सर्वांगीण रूप से विकसित और सर्वांग सुन्दर हो। उनका चिन्तन विभिन्न अवस्थाओं से गुजरता हुआ अपने जीवन के संध्याकाल में समग्र क्रान्तिवादी के रूप में परिणत हो गया।

जयप्रकाश नारायण की चिन्तन यात्रा–

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12 ,S Iss 1, 2023

जयप्रकाश नारायण आजीवन किसी एक विचारधारा के प्रति प्रतिबद्ध नहीं रहे। उसका रूप निरन्तर बदलता रहा। जैसे-जैसे अनुभव के आधार पर जयप्रकाश नारायण का सोच बदलता रहा, वैसे-वैसे उसका रूप भी बदलता रहा। लेकिन उसके विकास का आधारभूत लक्ष्य एक ही रहा। यह लक्ष्य था- एक ऐसी न्यायनिष्ठ शोषणमुक्त स्वतंत्रता, समानता और बन्धुत्व पर आधारित समाज व्यवस्था का अनुसंधान जिसमें रहकर हर व्यक्ति एक शान्त, सुखी और समृद्ध जीवन जीने का अधिकार प्राप्त कर सके। वह हर व्यक्ति को हर समय और सुसंस्कृत जीवन जीने का अधिकार और अवसर प्रदान कर सके। व्यक्ति अपना और अपने समाज का सर्वांगीण विकास करने में सफल और समर्थ हो सके। जयप्रकाश नारायण की चिन्तन-यात्रा के विकास के क्रम को हम निम्नलिखित चरणों में विभक्त कर सकते हैं-

राष्ट्रवादी चरण–

यह जयप्रकाश नारायण के चिन्तन का पहला चरण है। पटना में शिक्षार्थी रहते हुए उनके जीवन में राष्ट्रवादी भावनाओं यानी देश की स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिए उत्पन्न भावनाओं के माध्यम से इसका निर्माण हुआ। इससे प्रेरित होकर वे बीच में पढ़ाई छोड़कर 1920 में महात्मा गाँधी द्वारा भारतीय स्वराज्य के लिए छेड़े गए अहिंसक असहयोग आन्दोलन में सक्रिय रूप से कूद पड़े लेकिन चौरी-चौरा हिंसक हत्याकाण्ड से प्रभावित होकर जब गाँधीजी द्वारा इस असहयोग आन्दोलन को बन्द कर दिया गया तो जयप्रकाश नारायण के चिन्तन का राष्ट्रवादी चरण भी समाप्त हो गया तथा वे पुनः अपनी शिक्षा को पूर्ण करने में लग गए।

मार्क्सवादी–साम्यवादी चरण–

जयप्रकाश नारायण उच्च शिक्षा हेतु एक स्वावलम्बी शिक्षार्थी के रूप में अमेरिका चले गए। वहाँ उन्होंने सात वर्ष रहकर अपनी शिक्षा पूर्ण किया तथा यहीं पर उनकी चिन्तन का दूसरा चरण - मार्क्सवादी चरण के रूप में प्रारंभ हुआ। जयप्रकाश नारायण की एक समाजवादी के रूप में चिन्तन मार्क्सवाद के माध्यम से प्रारंभ हुई। अमेरिका में वे अपने शिक्षकों तथा सहपाठियों के माध्यम से मार्क्सवादी विचारधारा के संपर्क में आए जिसके फलस्वरूप मार्क्सवाद आधारित साम्यवाद को ही वे समाजवाद का प्रमाणिक रूप मानने लगे। उन्होंने मार्क्सवादी साहित्यों तथा भारतीय साम्यवादी लेखक एम.एन. राय की रचनाओं का गहन अध्ययन किया और वे साम्यवादी सोच के एक पक्के समाजवादी बन गए तथा उसी में भारतीय स्वतंत्रता तथा निर्धनता के उसकी मुक्ति संभव मानने लगे। इस हेतु उन्होंने भारत की आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों तथा

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12 ,S Iss 1, 2023

समस्याओं के समाधान हेतु मार्क्सवादी सिद्धांतों के अनुसार व्याख्या करके यह सिद्ध करने की चेष्टा की कि उनके माध्यम से ही भारतीय समाज का समाजवादी अवधारणा अनुसार पुनर्निर्माण किया जा सकता है।

मार्क्स की तरह जयप्रकाश नारायण भी समाजवाद को मुख्यतः एक आर्थिक सिद्धांत या विचारधारा मानते हैं जिसका उद्देश्य कुछ हाथों में हुए आर्थिक सत्ता के केन्द्रीकरण को समाप्त कर आर्थिक समानता स्थापित करना है तथा उसके माध्यम से सामाजिक व्यवस्था के अन्य सभी पक्षों को उसके अनुकूल पुनर्निर्मित करना है। जयप्रकाश नारायण मार्क्स की तरह आर्थिक सत्ता को मौलिक दृष्टि से महत्वपूर्ण मानकर उसके माध्यम से ही समस्त समाज के कायाकल्प में विश्वास करते हैं। जयप्रकाश नारायण समाज में भौतिक शक्तियों की प्रधानता स्वीकार करते हैं तथा मार्क्सवाद के द्वन्द्वात्मक स्वरूप में विश्वास करते हुए उनके आधार पर निर्मित समाज के साधन सम्पन्न और साधनहीन वर्गों के मध्य वर्ग संघर्ष की अवधारणा का समर्थन करते हुए उसे समाजवादी समाज की स्थापना का मुख्य साधन घोषित करते हैं। उनके अनुसार द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद ही हमें आर्थिक असमानता और उससे होने वाले शोषण से परिचित कराता है तथा उनसे मुक्ति का मार्ग भी सुझाता है।

जयप्रकाश नारायण ने मार्क्स के इस सिद्धांत को भारतीय समाज पर लागू करते हुए यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि भारत का बुर्जुआ वर्ग अर्थात् पूँजीपति एवं जमींदार वर्ग एक भागीदार की तरह ब्रिटिश साम्राज्यवादियों से मिलकर भारतीय जनता का शोषण कर रहा है। मार्क्स की तरह वैयक्तिक सम्पत्ति को शोषण का एक मुख्य कारण मानते हुए जयप्रकाश नारायण ने उसका विरोध ही नहीं किया वरन् शोषण मुक्ति के लिए उसका उन्मूलन को आवश्यक बतलाया। उनके अनुसार समाजवादी समाज की स्थापना का लक्ष्य वैयक्तिक सम्पत्ति का उन्मूलन कर उस पर सार्वजनिक स्वामित्व कायम करके ही प्राप्त किया जा सकता है।

इस प्रकार शिक्षा समाप्त कर अमेरिका से भारत लौटने पर अपनी सुदृढ़ मार्क्सवादी आस्थाओं के कारण जयप्रकाश नारायण को कांग्रेस के तत्कालीन कार्यक्रमों में परिलक्षित समाजवादी रूझान अपर्याप्त लगे तथा उन्होंने इस हेतु सन् 1934 में आयोजित भारतीय कांग्रेस समाजवादी दल के प्रथम अधिवेशन में एक पन्द्रह सूत्री कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया जो उनकी मार्क्सवादी आस्थाओं को प्रतिबिम्बित करता था।

लोकतंत्रवादी-समाजवादी चरण–

अमेरिका से लौटने के बाद जयप्रकाश नारायण का मार्क्सवादी समाजवाद की प्रतिबद्धता के प्रति मोह भंग होने लगा। उसके मुख्य रूप से दो कारण थे। पहला कारण था समाजवादी व्यवस्था को व्यावहारिक रूप प्रदान करने हेतु सोवियत रूस के साम्यवादी शासकों द्वारा अपनाये

गये दमनात्मक साधन और दूसरा कारण था सोवियत रूस के पिछलग्गू के रूप में भारतीय साम्यवादियों द्वारा राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन में निभायी गई प्रतिक्रियावादी भूमिका। प्रारम्भिक दौर में जयप्रकाश नारायण ने मार्क्सवाद के मूलभूत सिद्धांतों को असंगत नहीं बताया वरन् उन सिद्धांतों को देश-काल की परिस्थितियों के अनुरूप ढ़ालने पर बल प्रदान किया लेकिन जैसे-जैसे उनके चिन्तन का विकास हुआ, वैसे-वैसे उन सिद्धांतों की असंगतता से प्रभावित होकर वे मार्क्सवाद से दूर होते गए तथा वे अपने समाजवाद को मार्क्सवादी समाजवाद की जगह लोकतांत्रिक समाजवाद के नाम से पुकारने लगे। जयप्रकाश नारायण के चिन्तन में परिवर्तन की यह प्रक्रिया सन् 1940 से स्पष्ट रूप से झलकने लगी। समाजवाद के लोकतान्त्रिक चरित्र पर जोर देने के कारण उनका समाजवाद मार्क्सवाद से दूर और गाँधीवाद के निकट आने लगा तथा वह शनैः-शनैः गाँधीवादी रूप लेने लगा। उन्होंने अपनी इस अवधारणा के समर्थन में कहा कि "मार्क्सवाद एक सामाजिक विज्ञान और सामाजिक परिवर्तन की क्रान्तिकारी पद्धति है, अतः उसके चिन्तन में मताग्रह और कठमुल्लेपन को कोई स्थान प्राप्त नहीं हैं।" इसी आधार पर बदलती हुई विश्व परिस्थितियों ओर विशेष रूप से भारतीय स्थितियों को ध्यान में रखते हुए उन्होंने समाजवाद को लोकतन्त्रानुरूप परिभाषित करने पर जोर दिया तथा कहा कि समाजवाद का वास्तविक अर्थ सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्वतंत्रता के अनुरूप होना चाहिए।

जयप्रकाश नारायण ने स्पष्ट किया कि "समाजवादियों का लक्ष्य केवल पूँजीवादी व्यवस्था का उन्मूलन कर एक दलीय निरंकुशतावादी शासन की स्थापना करना नहीं है, वरन् एक ऐसे स्वतंत्र और समान लोगों के समाज की रचना करना है जो मानवीय मूल्यों पर आधारित हो तथा जिन्हें उनका व्यावहारिकता या शासकीय हितों के नाम पर किसी भी रूप में बलि नहीं चढ़ाया जा सके।" उसने यह स्वीकार किया कि समाजवाद और लोकतंत्र एक दूसरे के विरोधी नहीं वरन् पूरक हैं। जयप्रकाश नारायण द्वारा समाजवाद के लोकतांत्रिक चरित्र पर जोर दिए जाने का प्रमुख कारण उसे मानवीय बनाना था तथा उसमें मनुष्य की गरिमा और उसकी स्वतंत्र स्थिति को कायम करना था। इस प्रकार जयप्रकाश नारायण द्वारा परिकल्पित समाजवादी समाज न सिर्फ लोकतांत्रिक चरित्र का होगा वरन् उसका अंतिम लक्ष्य व्यक्ति का सर्वोच्च नैतिक उत्थान होगा। वह व्यक्ति की भौतिक समृद्धि का ही नहीं, बल्कि उनकी नैतिक उन्नति का भी मूर्त रूप होगा।

जयप्रकाश नारायण के अनुसार एक ऐसी समाज व्यवस्था की स्थापना होनी चाहिए जिसमें हर स्तर पर जनता का विशेषकर मेहनतकश जनता की भागीदारी हो, ताकि वह राज्य की मशीनरी के संचालक नौकरशाह वर्ग पर प्रभावी नियंत्रण रख सके तथा उन्हें समाजवादी आदर्शों के अनुकूल कार्य करने हेतु बाध्य कर सके। उन्होंने अपने समाजवाद में मनुष्य के भौतिक पक्ष की

IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12 ,S Iss 1, 2023

तुलना में उसके नैतिक पक्ष के उत्थान पर अधिक बल देता है। उनका मत है कि मात्र भौतिक विकास से मनुष्य को अच्छा या नैतिक मनुष्य बनने की प्रेरणा प्राप्त नहीं हो सकती। नैतिक उद्देश्यों के प्रति प्रेरणा और वेतना की सन्तुष्टि को ध्यान में रखकर ही उसके भौतिक विकास का प्रयत्न किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष–

जय प्रकाश नारायण के राजनैतिक विचारों में सर्वत्र राष्ट्र के प्रति अट्ट प्रेम, सामाजिक असमानता के कारण मार्क्स के साम्यवाद की स्वीकरोक्ति तथा सामाजिक-राजनैतिक समरूपता के लिए समाजवाद दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होता है। जय प्रकाश नारायण मार्क्सवाद से प्रभावित होन के बाद स्वतंत्रता के आदर्श की तरह समानता के आदर्श पर अपना अधिकार मान लिया था। उनके अनुसार मात्र स्वतत्रता ही पर्याप्त नहीं है। इस स्वतंत्रता के साथ शोषण, भूखमरी और गरीबी से भी मुक्ति मिलना चाहिए। जय प्रकाश नारायण के प्रारम्भिक विचारों में मार्क्सवाद अत्यधिक प्रभावशाली था तथा उनका विचार था कि मात्र मार्क्सवाद ही भारतीय राजनैतिक स्वरूप को परिवतित कर सकता है। सन 1932 ई. में जय प्रकाश नारायण के राजनैतिक विचारों न निर्माण में अत्यन्त महत्वपूर्ण थी। इस वर्ष वह महात्मा गाँधी के आन्दोलन में सहयोगी थे, जिसके कारण उन्हें जेल में रखा गया। इस जेल यात्रा न उनके राजनैतिक विचारों में मार्क्सवाद को और अधिक गहरा बना दिया, जबकि उनका मार्क्सवाद विचार अधिक समय तक स्थायी नहीं रहा। मनुष्य के शारीरिक विकास के साथ उसके मस्तिष्क का विकास समानान्तर रूप से होता है। मस्तिष्क के विकास के साथ उसकी पारिवारिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि मनुष्य में बौद्धिक एवं तार्किक क्षमता उत्पन्न करते है, जो विचारों को जन्म देती है। सामान्य व्यक्ति यदि एक धारणा के अन्तर्गत मस्तिष्क में विचार बना लेता है, वह स्थायी होता है। असामान्य व्यक्ति जिसमें तार्किक शक्ति अधिक होती है, वह अपने अनुभवों, काल तथा परिस्थितियों के अनुरूप विचारों में परिवर्तन करता रहता है। जय प्रकाश नारायण उन असमान्य महान व्यक्तियों में से एक थे, जिन्होंन एक विचाराधारा को अपने मस्तिष्क पर स्थायी नहीं होने दिया।

संदर्भ सूचीः

1. जैन पुखराज, मेहता प्रो. जीवन, राजनीति विज्ञान, एस.बी.पी.डी. पब्लिकेशन्स, आगरा, 2021, पृ. सं.- 217-243.
2. वर्मा डॉ. विश्वनाथ प्रसाद, आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, प्रकाशक, आगरा, 2018, पृ. सं.- 535-537.

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved,** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12 ,S Iss 1, 2023

3. फाड़िया डॉ. बी.एल., 2019, राजनीति चिंतन भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, पृ. सं.- 67–74.

४. पाण्डेय रविप्रकाश, भारतीय सामाजिक विचार, विजय प्रकाशन मंदिर सी.के. 15 / 53, सुडिया वाराणसी, 2009

५. दीक्षित चन्द्रीय, डेमोक्रेटिक सोशलिज्म इन इंडिया एस.चांद एंड कम्पनी, नई दिल्ली, 2011

६. ओंकार शरद, जय प्रकाश नारायण, टुवार्ड्स स्ट्रगल, ज्ञान भंडार, नई दिल्ली, मार्च, 2007, पृ. सं.- 7

७. रघुवंश, जय प्रकाश नारायण के विचार, सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, 2013, पृ. सं.- 82

८. सिह, मनोज कुमार एवं चौधरी, शैलेश कुमार भारतीय राजनीतिक चिन्तक-जय प्रकाश नारायण नारायण, पृ. सं.- 8